श्री कल्कि बाल वाटिका

मासिक पत्रिका

अंक 3 कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना : रश्मि गुप्त मार्च 2014

बन पड़े जब मृत्यु का अनुभव या तारीख स्वप्न में बार-बार आए तो सावधान रहना 3

5 "श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका-असम्भव को सम्भव करती है"

6 जहाँ न जाए रवि वहाँ जाए कवि सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

मेरे (मामाजी) जैसे मंद बुद्धि वाले का यह लेख शायद आपके कुछ काम आए 7

8 तुम भारत में जन्मे ऋषियों की संतान हो अपने स्वाभिमान को मत भूलो

भगवान कल्कि को अष्ट धातु के ऐरियल के माध्यम से करी गई प्रार्थना की मदद संबंधित देवी-देवता द्वारा तुरन्त पहुँचती है 9

12 स्वप्नानुभव

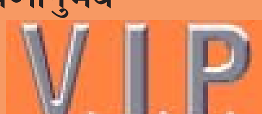

न 139 न 141

श्री कल्कि बाल वाटिका संस्कार रोपण कार्यशालाएं

दिल्ली विश्वविद्यालय
27 अप्रैल 2014

नोएडा
13 अप्रैल 2014

पंजाबी बाग
27 अप्रैल 2014

पटपड़गंज
20 अप्रैल 2014

गगन विहार
20 अप्रैल 2014

यमुना विहार
6 अप्रैल 2014

महावीर नगर
27 अप्रैल 2014

ग्रीन पार्क
13 अप्रैल 2014

कल्कि जी की छावनी

2 भगवान श्री कल्कि की तीन छावनियों की स्थापना

कैसी हैं मेरी स्वप्नमयी गंगा मां

जनवरी 2014 में मां गंगा ने एक ही महीने में 4 मूर्तियाँ एसे धाम शक्तिपीठ और सिद्धपीठ में लगाईं जो मामाजी के लिए एक स्वप्न में भी सोचना एक स्वप्न था और अब खुली आँखों से भी विश्वास नहीं होता। कई बार तो अपने चुटकी भर के देखता हूँ कि क्या वास्तव में यह सत्य हो गया। प्यारे बच्चों, क्या कहूँ इससे भी ज्यादा दुर्लभ कार्य जो मां गंगा 8 मार्च 2014 को काशी विश्वनाथ में कराने जा रही हैं साथ ही मामाजी की चाहतों में से एक

चाहत सरला बहनजी की जो नोएडा सेक्टर 67 (पृष्ठ 7) में कराने जा रही हैं यह मेरे लिये तो ऐसा है जैसा कि किसी के एक किलो के पात्र में सवा किलो मिल जाए।

कल्कि जी की छावनी

खुशखबरी! खुशखबरी! खुशखबरी!

भगवान श्री कल्कि की तीन छावनियों की स्थापना

रविवार दिनांक 13 अप्रैल 2014 को श्री कल्कि कीर्तन मंडल समस्त के तत्वधान में युगावतार भगवान श्री कल्कि की विशाल मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

स्थानः सर्व दर्शन सेवा आश्रम, भूपत वाला रोड, ललिता आश्रम के पास, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क सूत्रः श्री रामनारायण गोयल 09899463111

भगवान श्री कल्कि की एक नई छावनी खुली

24 फरवरी सोमवार 2014 को

माता झंडेवाली मंदिर, रघुवर पुरा, गांधी नगर, दिल्ली-31 में महाराजाधिराज भगवान श्री कल्कि की मूर्ति, प्राण प्रतिश्ठा समारोह बड़े ही हर्षोल्लास से नगर शोभा यात्रा निकालकर मनाया गया। शोभा यात्रा में नगर के सभी गन्मान्य व्यक्तियों और अनेकों भक्तों ने स्वयं को भाग्यवान से महाभाग्यवान बनाकर श्री कल्कि जी के दिव्य चमत्कारी दर्शनों का लाभ उठाया।

श्री पद्मा शरण गोयल व अन्य साथी गायकों के साथ संकीर्तन का आनन्द लेते हुए भगवान श्री कल्कि के अवतार का मुख्य प्रयोजन भी सत्संग के माध्यम से सनातन समाज को बताया गया।

सम्पर्क सूत्र: सुश्री शालिनी पाण्डेय 09212703815
सुश्री कल्पना तिवारी 09213812334

शनिवार दिनांक 8 मार्च 2014 को भगवान श्री कल्कि काशी विश्वनाथ के वट वृक्ष में विराजेंगे

रविवार दिनांक 20 अप्रैल 2014
स्थान : महिला कॉलोनी, झील चौक के बराबर, दिल्ली-31

संपर्क : श्री राकेश अग्रवाल-9810639148
सुश्री संजू गड़ौदिया-9312539397

शीघ्र ही कल्कि जी की तीन नई छावनियाँ खुलने जा रही हैं

- वाराही देवी यू पी लखनऊ से 125 किमी दूर
- अयोध्या में नागेश्वर नाथ मंदिर
- साहिबाबाद में श्री गौरी शंकर मंदिर

वाराही देवी यू पी लखनऊ से 125 किमी दूर— ऐसी मान्यता है कि भगवान विष्णु ने जब वाराह अवतार लिया था वब एक सुरंग बनाते हुए पाताल लोक में जाकर आततायी हिरयाणक्ष का वध किया था। तभी माँ वाराही भी अवतरित हुईं। इसी सुरंग के मुहाने पर लोग दीपक जलाकर पूजा अर्चना करने लगे। मंदिर के पुजारी श्री संतोष, श्री योगेन्द्र एवं श्री राघव दास जी ने बताया कि मंदिर में आज भी ये सुरंग है इसके गर्भ गृह में दिन रात दीपक जलता रहता है। इस सुरंग की लंबाई आज तक भी नापी नहीं जा सकी है। ऐसी मान्यता है कि आँख के रोगों से पीड़ित व्यक्ति के द्वारा यहाँ कल्प वास करके मंदिर का नीर आंखों पर लगाने से आँखो की ज्योति पुनः वापस आ सकती है।

अयोध्या में नागेश्वर नाथ मंदिर — सरयू नदी के तट पर बसी विष्णु जी के अवतार प्रभु श्री राम की नगरी में नागेश्वर नाथ मंदिर स्थित है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार एक दिन भगवान राम के छोटे पुत्र कुश सरयू नदी में स्नान कर रहे थे तब उनका बाजूबंद खुलकर गिर गया उन्होंने इसे ढूढने की बहुत कोशिश की लेकिन वह नहीं मिला, बाद मे एक नागकन्या ने लौटाया जिसके पिता एक परम शिव भक्त थे। कृतज्ञता के रूप में कुश जी ने नागेश्वर नाथ मंदिर बनवाया। यह मंदिर राम की पौढ़ी पर स्थित है जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह मंदिर महादेव को समर्पित है।

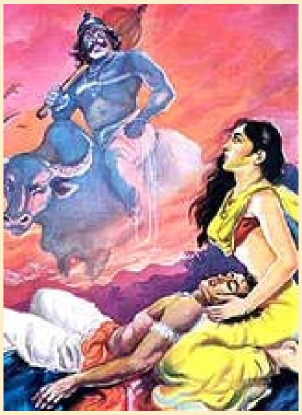

बन पड़े जब मृत्यु का अनुभव या तारीख स्वप्न में बार-बार आए तो सावधान रहना

— लेखिका सुश्री इंदु बंसल-9818416191

—लिपिका सुश्री इंदु गुप्त

प्यारे बच्चों,

अपनी आराधना करने वाले कल्कि भक्तों को भगवान श्री कल्कि की स्वप्नानुभव लीला आने वाले बड़े से बड़े संकट के प्रति आगाह कर देती है। लेकिन यह भक्त विशेष पर भी निर्भर करता है कि वह अत्यंत सावधानी से किस तरह से भगवान श्री कल्कि जी द्वारा अर्न्तजगत (ब्रह्माण्ड) से मिले संदेश (मैसेज) का पालन करते हुए उस संकट से स्वयं अथवा अपनो की रक्षा कर पाए।

उदाहरण स्वरूप

कई बार कल्कि भक्तों को अपनी या अपने किसी प्रियजन की मृत्यु संबंधित अनुभव आते हैं। साधारण स्थिति में भक्त यमुना महारानी कों 5 रुपये का सिक्का-गंभीर अवस्था में वस्त्र, सीधा वाला उपचार कर देता है और जिससे वह अपनी अथवा प्रियजन के स्वास्थय और जीवन दान की प्रार्थना करके दिक्कत परेशानियों से निकल गए हैं और निकलते जा रहे हैं।

सावधान-भक्तजन-सावधान!

यदि किसी भक्त को बार-बार अपनी अथवा अपने किसी प्रियजन, (माता-पिता, पति, पत्नि, संतान) की बार-बार मृत्यु दिखाई पड़े अथवा मृत्यु की तारीख तक आए तो विश्वास जानिए लगभग 55 वर्षों से कल्कि भगवान की आराधना करने वाले भक्तों का यह कहना है कि इस तरह के अनुभव सत्य घटित होकर रहते हैं। ऐसी परिस्थिति में यह अति आवश्यक है कि भक्त बहुत सावधानी से कल्कि भगवान की आराधना, पूजा (माला, हवन, पाठ एवं उपचार)करे एवं भगवान श्री कल्कि के कार्य का कोई सरल महत्वपूर्ण कार्य (प्रोजेक्ट*) पूरा करने का संकल्प ले लें। तब निश्चितरूप से उसे अथवा उसके प्रियजन को कल्कि भगवान की कृपा से जीवन दान के संकेत अनुभव मिलेंगे उससे आप अर्थात अन्तोगत्वा विजयी होंगे**

अब प्रश्न यह उठता है कि शास्त्र तो यह कहते हैं कि मृत्यु अटल है और टाली नहीं जा सकती फिर मृत्यु के अनुभव आने और उसके उपचार द्वारा मिलने वाले जीवन दान वाली बात कहाँ तक तर्क संगत है। भक्तों यह बात सत्य है कि शास्त्र कहते हैं मृत्यु की तिथि अटल है लेकिन हमें इस बात पर ध्यान देना पड़ेगा कि शास्त्र अकाल मृत्यु की बात को भी स्वीकार करते हैं और अपने आस-पास के परिवेश में हम अकाल मृत्यु की घटनाएं भी सुनते हैं।

अकाल मृत्यु क्या होती है?

कई बार व्यक्ति विशेष के भाग्य में लंबा जीवन होता है लेकिन कुछ समय ऐसा आता है जहाँ राहू केतू मंगल शनि इस प्रकार आ जाते हैं जो मार्केश बना दे। क्रूर ग्रहों के कुटिल संजोग इकट्ठे हो जाते हैं जिससे व्यक्ति के भाग्य में मार्केश आकर बैठ जाता है। जो मृत्यु का कारण भी बन सकता है। आपने अक्सर पंडितों को कहते हुए सुना होगा कि "व्यक्ति के भाग्य में लंबा जीवन है लेकिन इस समय मार्केश आया हुआ है। पर यदि यह टल जाएगा तो व्यक्ति लंबा जीवन जीएगा। वह बच सकता है आप मृत्युंजय महामंत्र का जाप, हवन एवं दान पुण्य आदि करवाइये।"

आपने इस तरह की घटनाएं भी बहुत सुनी होंगी कि किसी व्यक्ति की अकसमात मृत्यु हो गई है और फिर पत्री दिखाने पर पता चलता है कि इस समय इसकी पत्री में भयंकर मार्केश था यदि यह आपको पता होता और पूजा पाठ आदि करवाते तो यह टल सकता था। लेकिन पता नहीं चला और व्यक्ति की आकाल मृत्यु हो गई। जरा ध्यान दें तो अकस्मात आतंकवादी हमला-प्रकृति प्रकोप-सुनामी जिसमें पूरा शहर बह जाता है।

इसी संदर्भ (कान्सेप्ट को पूर्णत: स्पष्ट करने के लिये कल्कि भगवान से जुड़ी एक जरा **जिद्दी भक्ता की आपबीती आपको बताना चाहेंगे।**

दो वर्ष पूर्व मेरी माताजी कल्कि जी से जुड़ी थीं। मैंने अपनी तरफ से कल्कि भगवान की आराधना से जुड़ने की पहल नहीं की थी। लेकिन मेरी मम्मी के स्वप्नानुभव में मैं बार-बार आने लगी। तब मेरी मम्मी ने मुझे कल्कि भगवान के बारे में बताया और मुझे कल्कि भगवान के महामन्त्र का जाप करने के लिए कहा। उनकी बात सुनकर मेरे मन में भी कल्कि भगवान के लिए आकर्षण उत्पन्न हुआ। मैं उनकी माला करने लगी। लेकिन फिर तो मुझे ऐसा लगा कि मैं किसी बड़ी उलझन में फँस गई हूँ? क्योंकि मुझे रोज स्वप्नानुभव होने लगे। स्वप्नानुभवों में प्राय मुझे बुरा ही दिखता था। कभी मुझे अपने पति के लिए बुरा दिखता था तो कभी बच्चों के लए बुरा दिखता था। तभी मैं मामाजी से जुड़ी। जो भी बुरे अनुभव आते थे उनके उपचार संकल्प इत्यादि करने लगी।

सोते हुए में आते निर्देश

लेकिन बुरे अनुभव आने नहीं रुके। इन अनुभवों से मेरे मन में झल्लाहट होने लगी थी। क्योंकि हर समय बुरा दिखता था और कई बार तो सोने में भी डर लगता था और मैं सोती भी नहीं थी। फिर मामाजी ने मुझे उपचारों के साथ कल्कि जी के और कामों से जुड़ने के लिए कहा जैसे सामुहिक हवन, कीर्तन, बाल वाटिका आदि...। लेकिन मैं नियमित रूप से इन कार्यों को करने में अपने आप को असमर्थ महसूस करती थी। मुझे लगता था उपचार तो कर ही दिया है

तो यह सब करने की क्या आवश्यकता है।

इसी दौरान मेरे साथ कुछ ऐसी घटना घटी की मैं यह सोचने पर बाध्य हो गई कि जो अनुभवों में दिखता है वह सत्य घटित होता है और उपचारों के द्वारा हम इससे बच सकते हैं। मुझे बार-बार अपनी बड़ी बेटी के गिरने और चोट लगने के अनुभव आते थे। तब मैं मामाजी से पूछ कर कुछ उपचार किए थे (जैसे:- काली मां, भैरो बाबा, योगमाया मां, बगुलामुखी मां, यमुना महारानी जी)

एक दिन सच में मेरी छ: साल की बेटी बहुत तेजी से गिरी जिसके गिरने की तेज आवाज से हम सब सारा घर काँप उठे। लेकिन जब हम उसके पास पहुँचे तो देखकर हैरान हो गए कि इतनी जोर से गिरने के बाद भी उसे कोई चोट नहीं लगी थी। वह सर के बल गिरी थी लेकिन काई निशान या गोला तक नहीं था।

इस घटना ने युगावतार भगवान श्री कल्कि के प्रति मेरे भक्ति भाव को बहुत ज्यादा दृढ़ कर दिया। कल्कि जी की स्वप्नानुभव लीला और उनके उपचारों का मैं लोहा मान गई।

लेकिन इस घटना के बाद भी मुझे अपने प्रियजनों के लिए मौत के अनुभव आत रहे। मैं चाहती थी कि मैं इनका उपचार कर दूं और आराम से रहूं। तब मामाजी ने निम्न पंक्तियाँ लिख कर मेरी मम्मी को दे दी— मामाजी ने कहा— जो तुम्हें बार-बार अपने प्रियजनों के मरने के अनुभव आ रहे हैं, मुझे समझ नहीं आ रहा भगवान तुम्हें बार-बार पति के लिए और बच्चों के लिए अनुभव क्यों दे रहे हैं। लेकिन मेरा पिछले 55 साल का अनुभव है कि जो अनुभव बार-बार आता है वह अच्छा नहीं होता। 100 प्रतिशत बुरा होकर ही रहता है। **ऐसे में आप चाहें तो कल्कि नाम को छोड़ दीजिए। और दीपक जला कर सभी अनुभवों को वापिस भेज दीजिए।** क्योंकि कलियुग के चैलेंज को झेलने के लिए तलवार की धार पर चलना पडता है। आपके केस में जो आपका मन भी विचलित होता है कि मैं नहीं मानती ऐसा बार-बार दिखना मेरे मन की सोच है आदि आदि। आप कल्कि नाम लेना छोड़ दें। औरों की तरह आपके पास खुला पैसा है आप अपनी पसंद की चैन की जिन्दगी जिएं। होई है सोई जो राम रची राखा।

मृत्यु का दूसरा कारण बनता है भाग्य में आयु का ही न होना।— भगवान श्री कृष्ण अभिमन्यु को बचाना चाहते थे इसके लिए अर्जुन को बार-बार मना करते रहे अर्जुन सुन झूठी शान के लिए तू छोटे से राजा की ललकार पर बार-बार अपने रथ को मुझ से मत भगवा। युद्ध का मैदान है कहना मान जा लेकिन अर्जुन ने बोला ''तुम मेरे सारथी हो जैसा कहता हूँ वैसा करो—परिणाम अभिमन्यु मारा गया।

जब मम्मी ने मुझे यह सब सुनाया तो मैं बहुत परेशान हो गई कि मामाजी ने ऐसा क्यों लिखा है। तब मैं मामाजी के घर गई और उन्होंने मुझे पाँच घण्टे का दुर्लभ सत्संग दिया। जिससे कल्कि भगवान की अनोखी लीला में शक्तियों से खेल खेलना सीखना आवश्यक है—यह समझने का प्रयत्न किया।

यह सारी बातें मैं पूरी तरह तो नहीं समझ पाई लेकिन उस दुर्लभ सत्संग के फल स्वरूप एक अद्भुत निष्ठा मेरे अन्दर उत्पन्न हुई और मैंने दृढ़ मन से यह संकल्प किया कि अब कल्कि भगवान का जो भी कार्य मेरे सामने आएगा मैं उसे पूर्ण निष्ठा से बिना किंतु परंतु के पूरा करने का प्रयत्न करूंगी।

मेरे इस संकल्प ने पुन: मामाजी की इस बात को मेरे आगे प्रमाणित किया कि कल्कि भक्तों के द्वारा किया कोई भी कार्य चाहे वह मानसिक हो अथवा शारीरिक, उस पर हर पल अंर्तजगत की निगाह रहती है। ''तुम सिर्फ अच्छा सोचो तुरन्त तुम्हें उसका पुण्य मिलना आरंभ हो जाएगा''

श्री कल्कि जी ने स्वप्नानुभव में मुझे ठाकुर रामकृष्ण परमहंस के दर्शन कराए। ठाकुर की अलौकिक अनुभूति का स्मरण हर पल मुझे रोमांचित कर रहा है। मुझे यह बात बिलकुल भी पता नहीं थी कि गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी ठाकुर रामकृष्ण परमहंस का ही पुनर्जन्म हैं। इसी अनुभव में मुझे एक वाणी सुनाई दी जो कह रही थी कि ''ठाकुर रामकृष्ण परमहंस ही गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी हैं'' गुरुजी के इन शब्दों पर मेरा पूर्ण विश्वास है।

स्वप्न बँटे संदेश बँटे और अनुभव बँटे अपार,
क्षीरसागर वासी श्री हरि ने लीना अब कल्कि अवतार।

**प्रोजेक्ट हेतू सम्पर्क सूत्र-सुश्री मेघना गोयल (0-9136377829) मामाजी (0-7379066665) सुश्री इंदु बंसल (09818416191)*

***इस तरह के विभिन्न पहलू सच्ची आपबीतियों के साथ अगले अंको में पढ़ना न भूलें। (पति-पत्नी-पत्री-कल्कि)*

आम खायें गुठलियों के दाम पायें

गर्मी की छुट्टियो में तीन दिन की ड्राइंग प्रशिक्षण प्रतियोगिता में 2000 रुपये तक के पुरस्कार पाइये

गर्मियों की स्कूल की छुट्टियों में तीन दिन का कल्कि जी की मूर्ति में जयपूर से आए श्री जगदीश जी मूर्तिकार पेंटर द्वारा कल्कि जी की मूर्ति पर कलर बनाना व करना सिखायेंगे। प्रशिक्षण के बाद प्रतियोगिता में सफल बच्चों को अपनी पसंद के 2100 रुपये-1150 रूपये-500 रूपये तक के पुरस्कार स्वयं लाने की सुविधा होगी।

स्थान: श्री हनुमान जी-श्री कल्कि मंदिर-करोड़ीमल कॉलेज परिसर, छात्रा मार्ग, दिल्ली-7

समय: 12 बजे से 4 बजे

नाश्ते के कूपन वहीं मिलेंगे

"श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका-असम्भव को सम्भव करती है"

जुलाई-2013 का चमत्कार

– डॉ महेशानन्द
08447960197

जुलाई 2013 की मासिक पत्रिका का मुख पृष्ठ

एक दिन कोई यजमान मुझसे अपनी समस्या का समाधान पूछने आया। मैंने उन्हें 5-10 मिनट इंतजार करने के लिये कहा। इसी बीच उनकी नज़र श्री कल्कि मासिक पत्रिका पर पड़ी और उन्होंने मुझसे आज्ञा लेकर इस पत्रिका के पेज पलटने शुरु किये और पेज न० 4 पर "आधुनिक युग में शास्त्रोक्त, आध्यात्मिक व सांसारिक सुखों के लिये राम बाण-इलैक्ट्रिक हवन कुण्ड" के विषय में उन्होंने पढ़ा और मुझसे इसके विषय में पूछा, जबकि सच यह था कि मैंने यह पत्रिका उस समय तक पढ़ी ही नहीं थी। मैंने उस समय जवाब में स्थिति को संभालते हुए उस यजमान को संतुष्ट तो कर दिया था परन्तु मैं स्वयं में संतुष्ट न था। उस समय मुझे ऐसा अहसास हुआ कि इस पत्रिका को मुझे पहले पढ़ना चाहिए था। उस यजमान के जाने के तुरन्त बाद मैंने इस पत्रिका को शुरु से आखिर तक पढ़ डाला और जैसे ही मैंने इसे पूर्ण किया मुझे एक सुखद आनन्द का सा अहसास हुआ।

सबसे आश्चर्य की बात यह है कि जैसे ही मैंने यह पत्रिका पढ़कर रखी इतने में ही मेरा मोबाईल फोन बजा, जहाँ से मुझे एक विशिष्ट यजमान की बेटी की शादी की कॉल आई थी इसका मुझे पिछले एक वर्ष से बेसबरी से इंतजार था, वास्तव में यह कॉल मेरे लिये बहुत महत्तवपूर्ण थी। पहली कॉल के समाप्त होते ही दूसरी कॉल मेरे मकान मालिक की थी। कुछ समय पहले उन्होंने मुझसे कहा था कि हम लोग अपने मकान (जिसमें मैं फिलहाल किराये पर रह रहा हूँ)में शिफ्ट कर रहे हैं। उनका अब संदेश यह था कि महाराज आप परेशान न होना, हम अभी लगभग अगले 5 वर्षों तक शायद अपने मकान में शिफ्ट नहीं कर पाएंगे। अत: हमारे कारण आपको जो परेशानी हुई इसके लिये हम क्षमा चाहते हैं।

हक्के बक्के में मेरे मुँह से निकला *भगवान इसे कहते हैं*

-सुश्री सुरभी गुप्त (धर्मपत्नी श्री राकेश गुप्त) -9810654193

खराब स्कूटर

भगवान श्री कल्कि का आभार व्यक्त करने के लिये हमारे पास शब्द नहीं हैं। हर मुसीबत में वो हमें कैसे गोद में उठाए रखते हैं ये तो हमें ही पता है। मेरे पति को फैक्ट्री के काम के लिये अक्सर वजीरपुर जाना होता है। 10 दिसंबर 2013 की रात 11 बजे तक जब मेरे पति नहीं आए तो मैंने उन्हें फोन किया कि आप कहाँ रह गए। मेरे पति बोले कि मैं बस अड्डे के पुल पर हूँ, मेरा स्कूटर खराब हो गया है, कोई ठीक करने वाला नहीं है, सो इसे ऐसे ही घसीट कर लाना पड़ेगा।

यह सुनकर मैं बहुत घबरा गई। मन में बुरे विचार आने लगे। मैं तुरन्त कल्कि जी के सामने बैठ गई। 20 रुपये निकाल कर गुरुजी(हनुमान जी) और कल्कि जी से प्रार्थना करी कि, मुझे नहीं पता आप ही अब इनकी सहायता करो और ये जल्दी घर आ जाएं। वहीं सकपकाई बैठी थी कि अचानक मुझे नींद आ गई। उठी तो 12:15 हुए थे। इतने में मेरे पति आ गए।

इन्होंने आकर बताया, तुझसे बात हुई तभी एक लड़का रिक्शा लेकर आ गया और मुझसे बोला आपका स्कूटर खराब हो गया है क्या? इन्होंने बोला हाँ तो वो बोला मेरे रिक्शे में अपना स्कूटर रख दो। मैं एक स्कूटर ठीक कराने वाले को जानता हूँ और इन्हें थोड़ी दूर ले गया। वहाँ एक स्कूटर ठीक करने वाला था। उसने इनके स्कूटर को केवल हाथ ही लगाया और स्कूटर ठीक हो गया। उस समय इन्हें भी बहुत आश्चर्य हुआ कि एकदम कैसे ठीक हो गया। फिर वो लड़का इनके साथ गांधी नगर तक आया। गांधी नगर तक आने के बाद वो बोला अब आप जाओ। इन्होंने उसे धन्यवाद किया और 100 रूपये देने लगे और बोले भइया चल तुझे खाना खिला देता हूँ, तुमने मेरी इतनी सहायता की पर वह बोला-नहीं मेरा हो गया। इन्होंने पलक ही झपकाई थी कि वह लड़का गायब हो गया। मेरे पति सकुशल घर पहुँच गए। तुरन्त मेरा माथा ठनका और मुझे **मामाजी द्वारा सत्संग में 1972 वाला गाड़ी का किस्सा याद आया जब मामीजी गर्भवती थीं और मामाजी वॉक्स वैगन कार को धक्का लगाकर लैम्प पोस्ट के नीचे लेकर आए थे और भगवान ने किस प्रकार आकर गाड़ी स्टार्ट करी थी।** सो अब मैं हृदय के कण-कण से मानती हूँ कि वास्तव में वह लड़का, रिक्शा वाला, स्कूटर ठीक करने वाला और कोई नहीं साक्षात भगवान थे।

उपचार: कल्कि जी , काली जी, विश्वकर्मा जी **प्रार्थना:** मेरी रक्षा करने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद

जहाँ न जाए रवि वहाँ जाए कवि
प्रकाशन में भावुकता काम नहीं आती

यह प्रसंग उस समय का है, जब वॉल्टर हाईंस पेज प्रसिद्ध अमरीकी मासिक पत्रिका 'दि वर्ल्ड्स वर्क्स' के संपादक थे। उस पत्रिका में रचना प्रकाशित होना किसी भी लेखक के लिए सम्मान की बात होती थी। इसलिए पेज के पास रचनाओं का अम्बार लगा रहता था। उन्हें रोज अनेक रचनाओं को स्वीकृत-अस्वीकृत करना पड़ता था। एक बार एक लेखक ने उन्हें पत्र लिखा- पिछले हफ्ते आपने मेरी कहानी सखेद लौटा दी। मेरा दावा है कि आपने मेरी कहानी पढ़ी ही नहीं। मेरा अनुमान सही था कि आप जैसे संपादक अपने कार्य में अक्सर ईमानदारी नहीं बर्तते। **इसलिए मैंने अपनी कहानी के बीच के पृष्ठों को एक साथ चिपका दिया था।** जब आपने मेरे पास कहानी सखेद वापस की तो कहानी के बीच के पन्ने वैसे ही चिपके हुए थे। यह आपकी पेशे के प्रति बेईमानी नहीं तो और क्या है। इससे स्पष्ट होता है कि आप अच्छे लेखकों की बजाए चाटूकारों को ही अपनी पत्रिका में स्थान देते हैं। पत्र पढ़कर पेज ने जवाब दिया- आपका ज्ञान अभी कच्चा है। हांडी में चावल पके हैं या नहीं, यह जानने के लिए एक चावल को टटोला जाता है, पूरी हांडी को उलटकर चावलों को टटोलने की जरूरत नहीं पड़ती। यदि एक चावल पक जाता है तो पूरे चावल पके हुए होते हैं और यदि पहला चावल ही कच्चा है तो पूरे चावल भी कच्चे होंगे। यह जवाब पढ़कर वह लेखक अत्यंत लज्जित हुआ। उसने विनम्रतापूर्वक माफ़ी मांगते हुए पेज को लिखा- आज से आप मेरे गुरु हैं। आपने मुझे छोटे से उदाहरण से बड़ा ज्ञान दिया है। मैं अब हांडी के सारे चावलों को पकाने का अभ्यास करूंगा।

संकलन कर्ता-मेघना गोयल 9136377829 आभार-नवभारत टाईम्स

हाय रे टी.वी. तैने कैसे मारा

प्यारे बच्चों, देखो टी.वी. ने मुझे कैसे मारा

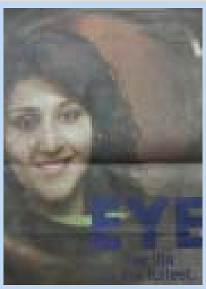

संकलन कर्ता-उर्वी गुप्त(01123973383)

आभार- नवभारत टाईम्स

पहले हम भोजन रसोई में बैठकर करते थे, उससे हमारे जीवन में पौष्टिकता आती थी। हम लम्बे, सुन्दर, ताकतवर बनते थे। जितनी भूख होती थी उतना ही चबाकर खाया जाता था। जबकि टी.वी. के आगे बैठकर खाना खाने से वो बात ही नहीं है जो पहले थी और न ही शरीर पहले से हैं। टी. वी. के आगे बैठकर भूख से ज्यादा खाया जाता है, चबाकर नहीं खाया जाता नतीजन धीरे-धीरे शरीर को बीमारियों के साथ मोटापा भी आ घेरता है। वो सारी तारीफ़ें जो कभी एक उस सुन्दर चेहरे के लिये की जाती थी उस दिन खत्म हो गईं जिस दिन से उसने चश्मा पहनना शुरु किया। चश्में ने न सिर्फ़ जीजाजी चेहरे की रौनक छीनी बल्कि खेलने में भी उसकी मुसीबतें बढ़ा दीं।

विश्व हिंदू परिषद के बयान पर विवाद चाहे खुद कितने ही बच्चे पैदा करो

विश्व हिंदू परिषद के नेता अशोक सिंघल के उस बयान पर विवाद हो गया है, जिसमें उन्होंने हिंदूओं की घटती आबादी पर चिंता जताते हुए कहा था कि हर हिंदू को 5 बच्चे पैदा करने चाहिए। कांग्रेस नेता राशिद अल्वी ने कहा कि सिंघल को हिंदू नहीं , वोटों की चिंता है। (एजेंसी)

आभार: नवभारत टाईम्स संकलनकर्ता: पूजा गुप्त

सत्संगमयी अनुभव गोष्ठी

दिनांक : शनिवार 8 मार्च 2014 एवं 5 अप्रैल 2014
स्थान : एम.के. हाउस, सी-2/8 अशोक विहार फेज-2
दीप सिनेमा के सामने, नई दिल्ली-52
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री राकेश गोयल, सुश्री सुषमा गोयल
(9899698240)
संचालिका- सुश्री इंदू बंसल (011-32448401)

दिनांक : शनिवार 8 मार्च 2014 एवं 12 अप्रैल 2014
स्थान : जी-3 थर्ड फ्लोर,मित्रद्वीप अपार्टमेंट पटपड़गंज
दिल्ली-92
समय : दोपहर 1 बजे से 5 बजे तक
संपर्क : श्री सुनील गर्ग, सुश्री संगीता गर्ग (9873349478)
संचालिका- सुश्री मेघना गोयल (913677829)

मेरे (मामाजी) जैसे मंद बुद्धि वाले का यह लेख शायद आपके कुछ काम आए

संयोजिका—इंदु बंसल 0818416191 लिपिका- इंदु गुप्ता

मामाजी

जून 2013 में छपे रोहित गुप्त के स्वप्नअनुभव में स्वयं भगवान श्री कल्कि का रोहित गुप्त से हुआ संवाद छपा था जिसकी प्रमाणिकता एवं सच्चाई में किंचित मात्र भी संशय नहीं है।

उसमें भगवान श्री कल्कि ने अन्तजर्गत में स्थापित राज दरबार का पूरा विवरण बताया था। जिसमें यह दिखाया गया कि भगवान की दैवी शक्तियाँ काम (एक्टिवेट) कर रही हैं। अधिक विवरण के लिये देखें (जून 2013 अंक)

लगभग 55 वर्षों से मैं भगवान कल्कि से जुड़ा हुआ हूँ। गुरुवर लक्ष्मीनारायण के सानिध्य में जो 8 वर्षों में 6 से 7 घंटे का प्रतिदिन सत्संग श्रीगुरुजी से मिला। सो बच्चों उन्हीं सब सिद्धांतों का पालन करते हुए एवं उनके बताए रास्तों से जितना मैं समझ पाया आज भगवान श्री कल्कि के साहित्य प्रचार सामग्री-मूर्ति स्थापना जैसे प्रोजेक्टों पर भगवान श्री कल्कि जी को प्रकट करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

लेकिन 25-30 वर्षों पूर्व भगवान श्री कल्कि का छोटे से छोटा कार्य करने में बहुत मुश्किलें आती थीं। 1960 में मुझे एक मांसिक अनुभव आया था जिसमें दैवी शक्तियों ने कलियुग के भीषण प्रकोप से मुझे आगाह किया। जिसकी निम्न पंक्तियाँ आज भी मुझे हौंसला देती हैं।

'' कलियुग की यह भीष्ण आंधी नहीं ठहरने देती है,
भक्तों को झटके दे देकर दुष्ट जनों को सेती है।''

योगमाया महारानी के मंदिर में जब मूर्ति लगी- वसंत विहार के मंदिर में कल्कि जी की मूर्ति लगी उस समय सारे निर्देश कल्कि भगवान के स्वप्न अनुभव लीला द्वारा मुझे और मेरे साथियों को प्राप्त हुए थे। लेकिन फिर भी मेरे और सिर्फ रामेश्वर दास जी गोयल के लिये हीरे की भस्म की भांति (जिसके बनाने में मेंढकों का पेशाब चाहिए। उसके लिये मेंढकों को इकट्ठा करके कांसे की थाली में बैठाया जाना जिनका हर समय उछलना ही स्वभाव है। पीछे से उनकी दुम पर चुटकी मारी जाती है तब कहीं जाकर 2-4 बार में उसकी 1-2 बूंद पेशाब की टपकती है।) बहुत ही दुष्कर कार्य था। प्रत्यके कदम पर मैंने मेरे साथियों ने कलियुग की काली शक्तियों का भयंकर कहर झेला था। ''जगह जगह पर कलियुग (आज के युग का बलवान राक्षस) बेकार के क्लेश करवाता था, लाठियाँ चलवाने-लाशे बिछवाने, जैसी धमकियाँ दिलवाता था कि देखूं तो तुम कल्कि वाले श्री कल्कि की मूर्ति कैसे लगा पाओगे'' अधिक विवरण के लिये एक बार पढ़कर देखें-(**प्रेरणादायक कहानी पृष्ठ न० 80 जब मूर्ति हंसी/पृष्ठ न० 87 अनुभवगम्य श्री कल्कि मंदिर वसंत विहार।)**

जैसे-जैसे कल्कि जी की छावनियाँ खुलीं वैसे-वैसे परिस्थितियाँ बदलीं। अब तो स्पष्ट ऐसा महसूस होता है कि कल्कि जी के विविध कार्यों में समस्त देवी देवताओं की विशेष कृपा और सहायता प्राप्त हो रही है। ऐसा लगता है कि हर चीज की पहल (एक्टीवेशन) बहुत ज्यादा बढ़ गई है। इन बातों को महसूस कर मैं अपने मन में बहुत आनन्द महसूस करता था। लेकिन रोहित गुप्ता के उक्त स्वप्न अनुभव ने मेरी खुशियों में भारत सरकार जैसी तीन शेर वाली मोहर का ठप्पा लगा दिया। भगवान श्री कल्कि जी की बताई गई बातों ने (राज दरबार स्थापित होना, प्रचार कार्य के लिये शक्तियों को ट्रांस्फर होना और सही ढंग से काम नहीं करने पर शक्तियों का वापिस चले जाना) ने स्पष्ट कर दिया कि कैसे आज भगवान श्री कल्कि के कार्यों में तेजी आ सकती है।

भगवान श्री कल्कि के कार्यों में जरा सी भी लापरवाही प्रमाद या नादानी होने पर दैवीय शक्तियों द्वारा दंडित (कोर्ट मार्शल) किये जाने के भय को भी प्रत्यक्ष महसूस किया ही नहीं दोस्तों, कर रहा हूँ। समय-समय पर अपनी आपबीतियों द्वारा कल्कि समाज को आगाह करने की कोशिश कर रहा हूँ चाहे कोई माने या न माने। **अगले पृष्ठ 7 पर पढ़ें आओ सत्रह घंटे**

तीन वर्ष तक कॉलेज की फीस के लिये प्रति तिमाही 45 रुपये दूसरों से मंगतो की तरह मांग कर लाने वाले इन्सान को प्रभु श्री कल्कि ने केन्द्र सरकार द्वारा ग्यारह निर्यात (एक्सपोर्ट) पुरस्कार दिलवाये जिसमें नगद राशि के साथ बड़ी-बड़ी चांदी की शील्डें भी शामिल हैं।

लेकिन कलियुग की कुचालें—उस समय उपचारों के न होने चक्रव्यूह में मुझे फँसने में कामयाब, मेरे कनस्तर में आटा भी नहीं-आदि आदि।

लेकिन प्यारे बच्चों मामाजी की कई चाहतों में से दो चाहते प्रभु श्री कल्कि शनिवार 8 मार्च 2014 को पूरी कर रहे हैं—

काशी विश्वनाथ के वट वृक्ष में श्री कल्कि जी विराजे

कल्कि जी की छावनी

नोएडा सैक्टर 67 में कोरपोरेट हाऊस में सरला बहनजी-श्री सत्यपाल जी के म्यूजियम का शुभारंभ

आओ सत्रह घंटे

—मामाजी

श्री सत्यपाल जी

स्वप्नानुभव : सुबह दिन निकलने वाला है, मैं पैट्रोलपम्प पर गाड़ी लेकर आया हूँ। वहाँ भगवान श्री सत्यपाल जी (जीजाजी) के रूप में खड़े हैं। मैंने उनके पैर छुए। उन्होंने खुश रहने का आर्शीवाद दिया और बोले ''जूते कल से पहने हैं! अर्थात क्या कल से काम ही कर रहे हो रात को आराम भी नहीं किया'' (जैसा की ऐसा पहले कई बार हो चुका है) मैंने कहा— नहीं मैं अभी सुबह उठकर आया हूँ। मैंने उनके माथे पर हाथ फेरा जैसे उन्हें पसीना आया हुआ है।

नोट: भगवान हमें अनेक रूपों में दर्शन देते हैं, उस रूप में जिसमें हम उनकी सांकेतिक भाषा समझ सकें। अत: अपने ऊपर चल रही परिस्थिति के हिसाब से आप हल निकालें तो श्रेयस्कर होगा। फिर भी समझ न आए तो अनुभव पैनल के मैम्बरों से अवश्य बात करें। यहाँ जीजाजी के रूप में श्री कल्कि जी ने कुछ आवश्यक निर्देश दिये हैं।

अर्थ: रात्रि के चौथे पहर में जल्दि उठिए। योगा में घूमने अवश्य जाऐं। लगातार काम न करें। बीच में थोड़ा आराम अवश्य करें। लेकिन हरामखोरी में भी न पड़े रहें। **काम करना, धन्धे व्यापार नौकरी पर जाना बहुत जरूरी है- तभी पैट्रोल मिलेगा** अर्थात घर और व्यापार की गाड़ी तभी चलेगी उससे ही घर व समाज में इज्जत मिलेगी। बीच में यदि आराम न किया तो लंबे अरसे तक बीमार होने पर स्वस्थ होने में ज्यादा समय लगेगा, ऐसी उनकी सलाह है।

उपचार: गाय माता को भोजन देते, भैरों बाबा का संकल्प लेते समय।

प्रार्थना: हे गाय माता, हे भैरो बाबा, मुझे शक्ति दो कि मैं अपने कामों को सत्यता से निभाऊँ और कलियुगी शक्तियाँ जो मुझे आराम नहीं करने देतीं, मुझे आराम दिलवा दें ताकि मेरा स्वास्थ्य बना रहे। मैं पहले की तरह लंबे अरसे तक बीच-बीच में बीमार न पडूं इस प्रकार मैं व्यापार और श्री कल्कि जी का कार्य सुचारु रूप से कर सकूँ।

निष्कर्ष: सत्रह घंटे के संबोधन से डॉक्टर राजीव गोयल स्वप्न दृष्टा पर कटाक्ष किया करता था। मुझे दो वर्ष सर्दियों में 5 से 9 हफ्तों तक परेशानी उठानी पड़ रही थी। इस अनुभव के बाद अपनाए तरीके से 2008, 2009 और 2010 में तो बिलकुल स्वस्थ्य रहते हुए नैमिषारण्य तीर्थ में श्री कल्कि जी की मूर्ति लगी। उसके बाद से श्री हरि कल्कि काम ले रहे हैं और वर्ष 2011 में प्रतिमास के अनुसार श्री कल्कि जी की मूर्ति लगीं।

इमली

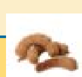

-डॉ वेद प्रकाश गुप्त 011-23936187

इसमें लौह (Iron) पोटाशियम (copper,selenium) इत्यादि खनिज पदार्थ होत हैं जो हमारे शरीर में सूजन, कैंसर, शुगर (Diabetes) व वजन को नियन्त्रित रखने में सहायता करते हैं। सेवन की विधि: रसम व सांवर, सौंस, टमाटर प्यूरी की जगह, चाट इत्यादि में इमली का इस्तमाल कर सकते हैं।

तुम भारत में जन्मे ऋषियों की संतान हो अपने स्वाभिमान को मत भूलो

राजा राममोहन राय

बात उन दिनों की है, जब देश में इस्ट इंडिया कंपनी का शासन मजबूत होता जा रहा था। अंग्रेज अपने आपको भारतीयों से बहुत ऊँचा मानते थे। भारतीयों से बुरा बर्ताव करना उनकी दिनचर्या बन चुका था। उनके सामने कोई भी हिंदुस्तानी पालकी या घोड़े की सवारी नहीं कर सकता था। एक दिन राजा राममोहन राय एक पालकी में बैठ कर कहीं जा रहे थे। रास्ते में कलक्टर हेमिल्टन खड़ा था। उसे देखकर भी राममोहन राय पालकी से नीचे नहीं उतरे। हेमिल्टन गुस्से से लाल-पीला हो गया। उसे यह नागवार गुजर रहा था कि एक हिंदुस्तानी उसके सामने से पालकी में बैठकर निकले। उसने पालकी रुकवा ली। राम मोहन राय नीचे उतर आए और विनम्रतापूर्वक कलेक्टर हेमिल्टन से पूछा कि बात क्या है? हेमिल्टन उन्हें भला-बुरा कहने लगा। उस समय राम मोहन राय ने बात बढ़ाना ठीक नहीं समझा। वह हेमिल्टन की उपेक्षा कर पालकी में वापस बैठे और आगे बढ़ गए। उन्होंने इस बात की शिकायत लार्ड मिंटो से की। लार्ड मिंटो ने हेमिल्टन का मामूली चेतावनी देकर बात समाप्त कर दी पर राम माहन राय इतने से ही संतुष्ट नहीं हुए। उनके एक मित्र ने उन्हें समझाया कि अब तो हेमिल्टन को उसके लिए झाड़ भी पड़ चुकी है इसलिए बात बढ़ाने से कोई फायदा नहीं है। राम मोहन राय बोले- यह भारत के स्वाभिमान का मुद्दा है। अगर अभी इस भेदभाव का विरोध नहीं किया गया तो यह समस्या बढ़ती ही जाएगी। उन्होंने हिंदुस्तानियों से अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे बुरु बर्ताव के खिलाफ़ कानून बनवाने की ठान ली और बाद में अपने अथक प्रयासों से ऐसा कानून बनवाने में सफल भी हुए। संकलन कर्ता- मामाजी 9136377829

आभार- नवभारत टाईम्स

क्या आप भी राजा रानी बनना चाहते हैं?

तो आएं अन्य राजा रानियों की तरह आप भी ऐसे चमत्कारी महाविष्णु भगवान श्री कल्कि की मूर्ति लगाने का विचार बनाइए और पाइए अन्य राजा रानियों की तरह अपने जीवन में भी प्रतिदिन बदलाव।

सुश्री रमणी जर्मन के राष्ट्रपति से हाथ मिलाते हुए

अगले अंक में पढ़ें— जर्मन राष्ट्रपति के भारत दौरे के दौरान श्री कल्कि बाल वाटिका सदस्या सुश्री रमणी जो भारत सरकार के खर्चे पर दो बार जर्मनी गईं। कैसे प्रभु श्री कल्कि ने उनके मन की चाहत पूरी की

भगवान कल्कि को अष्ट धातु के ऐरियल के माध्यम से करी गई प्रार्थना की मदद संबंधित देवी-देवता द्वारा तुरन्त पहुँचती है

स्वप्न दृष्टा-श्री रोहित गुप्त (09899499848)

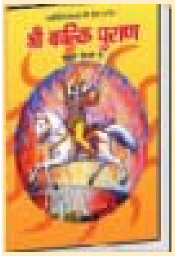

कल्कि पुराण

मुझे 21-12 2013 समय प्रात: ब्रह्म मुहूर्त परेशानियों से निकलने व धन-वैभवता के लिये कूण्डेवालान में स्थित भगवान श्री कल्कि जी का मंदिर दिखाई दे रहा है जिसमें पूजा करके मैं बाहर की तरफ आता दिखाई दे रहा हूँ कि तभी वहीं नारायण आए और प्रसन्नचित्त मुद्रा में जैसे कि मानो प्रसन्नता का पूर्ण वैभव उनके चेहरे पर दिखाई दे रहा था और बोले आ गए दर्शन करके। मैंने कहा- हाँ जी और आप कैसे हैं जी? इसपर वह बोले कि सामने की तरफ देखो मंदिर के अंदर क्या दिख रहा है? मैंने कहा कि सभी देवी देवताओं के दर्शन हो रहे हैं। इस पर वह (नारायण)बोले मित्र अब जरा सा ऊपर की ओर देखो और बताओ कि क्या दिखाई दे रहा है? मैंने ध्यान पूर्वक ऊपर की ओर देखा और कहा कि मुझे गुम्बद दिखाई दे रहा है। इस पर तपाक से वह बोले कि इसका मतलब जानते हो क्या होता है? मैंने कहा कि नहीं लेकिन हाँ मंदिरों में इस बनावट का कार्य होता है। इसपर वह बोले कि यह शक्ति उतप्रेरक होता है।

जब श्री कल्कि प्रचार की सामग्री बाँटने स्वयं निकले

इसमें से भक्त की पूजा याचना देवलोक तक जाती है और वहाँ से शक्तियों को उसके मनवांछित कार्य हेतू प्रदान किया जाता है। इसपर मैंने कहा कि कृप्या साफ साफ बता दीजिए आप क्या कहना चाहते हैं, मैं समझ नहीं पा रहा हूं।

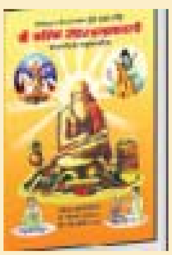

कल्कि सहस्त्रनाम

इसपर वह बोले कि कलियुग का समय विकट और विकराल रूप धारण करता जा रहा है और श्री कल्कि भक्तों के सैनिकों की शक्ति क्षीण होती जा रही है और उसका एक मात्र उपाय यह है कि तुम सभी कल्कि समाज अपने अपने पूजा के स्थानों पर इस गुम्बदीय आकृति का निर्माण करके अष्ट धातु या स्वर्ण से बनी लगभग 7 इंच लम्बी शूल (एरियल सा) लगाओ ताकि मेरे (श्री कल्कि) प्रचार प्रसार कार्य आगे बढ़ने पर कलियुगी शक्तियाँ अपने प्रहार से भक्तों की प्रगति रोकती हैं, बाधा डालती हैं जिससे कई सैनिक या तो रास्ता भटक जाते हैं या कई सैनिक मारे जाते हैं, उससे इन गुम्बदीय आकारों पर लगी अष्ट धातु की शूल (एरियल) मेरी दैवीय शक्तियों द्वारा तुम्हें सुरक्षा एवं शक्तियाँ प्रदान की जाएंगी। समय समय पर जो तुम्हें मेरे साहित्य-प्रचार प्रसार कार्य में आने वाली विकट परेशानियों से बचाएंगी। जो जो मेरे साहित्य प्रचार प्रसार का कार्य करेगा उससे उन्हें धन, सम्मान, सुख, स्वास्थय निरंतर मिलता रहेगा। इसपर मैंने कहा कि यह कैसे कहाँ निर्माण करवा सकते हैं। तो वह बोले कि त्रिभुजाकार गुम्मबदीय आकृति का निर्माण करवाकर इस प्रकार.........अपने पूजा स्थलों पर और सम्भव हो सके तो अपने मकानों की छत्त पर मध्य बिंदु पर स्थापित करो। शक्तियाँ मदद वास्ते भेजी जाएंगी यथा सम्भव हो सके तो यह कार्य शीघ्र ही कर लें समय बर्बाद न करें। इतना कह वह आगे की ओर चलने लगे कि मैंने पुकारा कि मित्र सुनिये तो जरा। कहाँ जल्दी में हैं आज नाश्ता नहीं करेंगे मेरे साथ। इसपर वह बोले कि प्रचार प्रसार कार्य का भार हल्का करने वास्ते प्रतिदिन उन मंदिरों में जहाँ भक्त अधिक से अधिक आते हैं वहाँ पर श्री कल्कि जी के यह साहित्य पत्र वितरित करने जाना और ज्यादा से ज्यादा भक्तों को श्री कल्कि जी के प्रचार प्रसार वास्ते जागृत करने के कारण जानना है। इसलिये आप नाश्ता ले लेवें और हो सके तो आप भी साहित्य पत्र वित्रित वास्ते अपने कल्कि समाज से सहायता ले लेवें और लग जाए भक्ति से पूर्ण होकर प्रचार प्रसार में। इतना कह नारायण आगे की ओर बढ़ते चले गये। अर्थ, उपचार अगले अंक में पढ़ें....

घर के मंदिर के गुंबद पर अष्टधातु का एरियल लगाएं

चाबी का छल्ला

पेपर वेट

भगवान श्री कल्कि का मंत्र बॉक्स

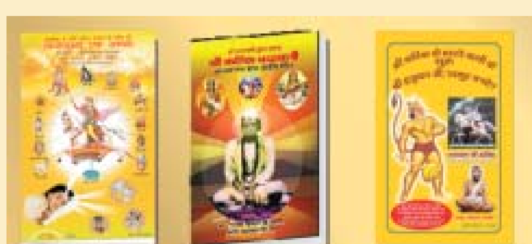

जब मामाजी ने कोलकाता बाल वाटिका को सराहा

ठाकुर रामकृष्ण परमहंस

संकलन कर्ता- मामाजी

लिपिका-कुमारी आकांक्षा चौधरी -09831072107

ठाकुर रामकृष्ण परमहंस की पावन धरती कोलकाता में उनकी ही कृपा से बेहद तर्कशील जो कल्कि भक्त समुदाय खड़ा हुआ है, और जिस तरह से अत्यंत गंभीरता से भगवान श्री कल्कि के प्राकट्य प्रचार के कार्यों को विभिन्न तरीके से पूर्ण करने का प्रयत्न कर रहा है उसके लिये दिल्ली बाल वाटिका की ओर से उनके प्रशंसनीय कार्यों के लिये हार्दिक अभिनंदन करते हैं। वह सब साधुवाद के पात्र हैं। पिछले डेढ़ सालों में कोलकाता में श्री कल्कि भक्तों द्वारा भगवान श्री कल्कि के प्रचार कार्यों के लिये किये गये सराहनीय कार्यों की एक झलक :-

1.कल्कि जी के प्रोजेक्टों ने कैसे आनन फानन में मेरे बीवी बच्चों को जीवन दिया-श्री विशी चौधरी

क. आद्यापीठ में कल्कि जी विराजे

ख. शोवा बाज़ार में कल्कि भगवान की मूर्ति स्थापना

ग. कोलकाता मासिक पत्रिका

घ. सम्भल महात्तम पुन: प्रकाशित

ड. गंगा सागर में कल्कि जी का प्रचार

च. कल्कि भगवान पर प्रदर्शनी

2. ''आपणो गाँव'' मेला में कल्कि भगवान पर exhibition

3. चलचित्र- श्री कल्कि- द लास्ट सेवियर सेंसर बोर्ड से मान्यता प्राप्त सर्टिफिकेट

4. संकल्प व प्रार्थनाएं

5. बच्चों की कार्यशाला एवं बाल वाटिका

6. बच्चों की बाल वाटिका के लिये एक साल का सुनियोजित करिकुलम

7. बैनर्स और फलैक्सिस

8. कल्कि सहस्त्रनाम का वर्गीकरण

9. भागवत में कल्कि भगवान का प्रचार

10. सामूहिक सहस्त्रार्चन, बहूकुण्डय यज्ञ तथा सवा लाख ज्योत

11. भगवान कल्कि के राईटिंग पैडस एवं कापियाँ

12. ऑडियो कैसेट- सुश्री रश्मि गनेरीवाल

13. 8 मार्च 2014 को काशी विश्वनाथ में भगवान श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना

निष्कर्ष:- प्रगट करें मिलजुल कर कल्कि की अब यही प्रण ठाना मामाजी की चाहत पूरे कल्कि समाज के भक्तों को यह दिशा निर्देश देना है कि दिल्ली बाल वाटिका जो कोलकाता बाल वाटिका के सराहनीय कार्यों का अभिनंदन कर रही है। इसके पीछे उद्देश्य किसी को आहत करना नहीं है बल्कि इसके पीछे एक निश्छल भावना यह है कि पूरे कल्कि समाज में एक प्रगाढ़ मैत्री संबंध बने और सभी भक्त एक दूसरे के कार्यों को प्रशंसा की नज़र से देखें और एक दूसरे कार्यों से प्रेरित होकर ज्यादा से ज्यादा कल्कि भगवान के साहित्य-प्रचार सामग्री के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिये प्रयत्नशील होंकर दिन दूनी रात चौगनी भौतिक, अध्यात्मिक तरक्की करें। एक वाणी अनुभव (इसी पत्रिका में संलग्न श्री रोहित गुप्त का अनुभव) के अनुसार फिर तो प्रतिपल रावण पर राम की विजय पायेंगे। जब तक आप समर्थ हैं परिस्थितियाँ अनुकूल हैं एक (भंगी) सक्के की कहानी के अनुसार कल्कि के कार्य कर जाओ-दोस्तों बाजी हाथ से निकलने पर फिर न कहना कारवाँ गुजर गया हम देखते ही रहे।

कल्कि भगवान की असीम कृपा से 2012 से 2013 के अंत तक में कल्कि भक्तों ने कई बड़े-बड़े परियोजना कार्य किये हैं। कल्कि जी ने हम भक्तों का हाथ थाम अपनी अहैतु कृपा बरसाई है। प्रस्तुत है एक लिस्ट उन सभी परयोजना कार्यों की—

1. ''आपणों गाँव'' मेला में कल्कि भगवान पर एक्सीभीशन

कोलकाता के प्रसिद्ध मेला ''आपणों गाँव'' जो हर साल आठ दिनों के लिए 24 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक लगता है, वहाँ पर कल्कि भगवान की एक्सीभीशन लगी जिसमें अनेकों लोगों ने कल्कि भगवान के बारे में जाना और उनके पूजा करने की विधि को समझा। सभी कल्कि भक्तों ने इस कार्य में अपना सहयोग दिया और इसे सफल बनाया। कल्कि भक्तों में हम पूरे चौधरी परिवार, सुनीता जैन, प्रतिभा अग्रवाल और श्रुति सर्राफ का विशेष धन्यवाद करते हैं। इस कार्य के लिए दिल्ली से श्रीमति इंदु बंसल विशेष रूप से कोलकाता आईं थी हम उनका भी धन्यावाद करते हैं।

2. शोवा बाजार में कल्कि भगवान की मूर्ति स्थापना

शोवा बाजार कोलकाता में स्थित लाल मन्दिर में श्री कल्कि भगवान की मूर्ति स्थापना बड़ी धूम घाम के साथ हुई। लाल मन्दिर 150 साल पुराना प्रख्यात मन्दिर है जहाँ हजारों लोग रोज दर्शन करते हैं। कल्किजी की मूर्ति स्थापना के दिन सवा मन भोग लगाया गया। 300 लोगों में प्रसाद वितरण हुआ। 250 लोगों के लिये भण्डारे की व्यवस्था थी। सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक हर भक्त को कल्कि जी का किट बाँटा गया, जिसमें कल्कि जी की कॉपी, पैम्फ्लेट, माला आदि चीजें थीं। इस कार्य के लिये हम वरुण चौधरी, मीना चौधरी, महावीर चौधरी और प्रतिभा अग्रवाल का धन्यवाद करते हैं। जिन्होंने आगे बढ़कर इस परियोजना कार्य का कार्य भार सम्भाला और उसे पूरा किया।

3. आद्यापीठ में कल्कि जी विराजे

आद्यापीठ, दखिणेश्वर, गुरुवर रामकृष्ण परमहंस के स्वप्न अनुभव

—शेष पृ.15 पर

भारत भूमि पर हमारा जन्म हमारे सौभाग्य की गाथा गाता है

भारत को एक सनातन राष्ट्र माना जाता है क्योंकि यह मानव सभ्यता का पहला राष्ट्र था। श्रीमद्भागवत के पंचम स्कंध में भारत राष्ट्र की स्थापना का वर्णन आता है। यहाँ के वासी चारों वेद (अथर्ववेद, सामवेद, यजुर्वेद एवं ऋगवेद), उपनिषदों, पुराणों का अध्ययन करते हैं व देवी देवताओं को मानते और उनकी पूजा करते हैं। भारतवर्ष कर्मभूमि है जबकि विश्व के दूसरे राष्ट्र भोग भूमि की श्रेणी में आते हैं, यहाँ पूर्ण परात्पर परब्रह्म परमात्मा महाविष्णु धर्म की स्थापना के लिए हर युग में अवतरित होते हैं। भारतवर्ष का इतिहास अत्यंत गौरवशाली है। हम भारतवासियों के पास परंपरा, संस्कृति और ज्ञान की अद्भुत धरोहर है।

जब जीरो दिया मेरे भारत ने, दुनिया को तब गिनती आई।
तारों की भाषा भारत ने दुनिया को पहले सिखलाई।
देता न दशमलव भारत तो चांद पे जाना मुश्किल था।
धरती और चांद की दूरी का अंदाजा लगाना मुश्किल था।
सभ्यता यहाँ पहले आई- पहले जन्मी है यहाँ पे कला।
अपना भारत वो भारत है जिसके पीछे संसार चला।
समय बढ़ता गया भारत गुलामी * की जंजीरों में जकड़ता गया तब श्री कल्कि ने अवतार लिया, दे अनुभव इसे उभार लिया। वे घोड़े चढ़ कर आएंगे भारत का मान बढ़ाएंगे,
बोलो जय जय जय श्री कल्कि पिता
बोलो जय जय जय कल्कि माता

*900 वर्ष मुगल राज 150 वर्ष अंग्रेज और 60 साल से काले अंग्रेज

लेकिन डोडो पक्षी की तरह....... ऐ मेरे वतन के लोगों परमहंस हो जाओ (भारतवर्ष के लोग परमहंस हैं यहाँ आतंकवादी आएं या दूसरे हमलावर इन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता)-यज्ञ शर्मा क्या परमहंस शब्दकोश में स्वाभिमान नाम का शब्द है ही नहीं जो हम गर्व से कहें कि हम हिंदू हैं हम हिंदूस्तानी है

देश गुलाम कैसे बनता है?

मैं भारत में काफी घूमा हूँ। दाएं, बाएं, इधर-उधर मैंने यह देश छान मारा और यहाँ मुझे एक भी भिखारी, एक भी चोर देखने को नहीं मिला। यह देश इतना समृद्ध है और इसके नैतिक मूल्य इतने उच्च हैं और यहाँ के लोग इतनी सक्षमता और योग्यता लिए हुए हैं कि हम यह देश कभी जीत सकते हैं यह मुझे नहीं लगा।

इस देश की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा इस देश की रीढ़ है और हमें यदि यह देश जीतना है तो इसे तोड़ना ही पड़ेगा। उसके लिए इस देश की प्रार्थना, शिक्षा पद्धति और संस्कृति बदलनी ही पड़ेगी। भारतीय लोग यदि यह मानने लगें कि विदेशी (विशेषत: अंग्रेजों) जो हैं श्रेष्ठ हैं अपनी स्वयं की संस्कृति से भी ऊंची है तो वे अपना आत्मसम्मान गंवा बैंठेंगे और फिर वे वही बनेंगे जो हम चाहते हैं —एक गुलाम देश

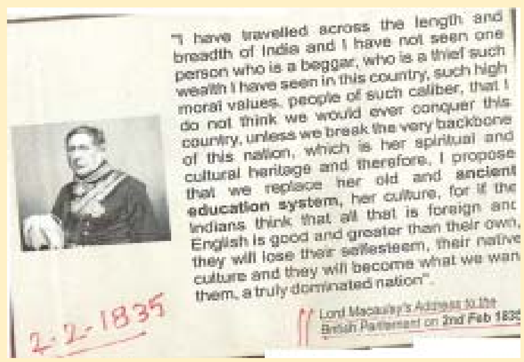

"I have travelled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a beggar, who is a thief such wealth I have seen in this country, such high moral values, people of such caliber, that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of this nation, which is her spiritual and cultural heritage and therefore, I propose that we replace her old and ancient education system, her culture, for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their selfesteem, their native culture and they will become what we want them, a truly dominated nation".

Lord Macaulay's Address to the British Parliament on 2nd Feb 1835

2-2-1835

गूगल से ली गई प्रतिलिपि जिसमें लॉर्ड मैकाले की स्टेटमेंट छपी है

2 फरवरी 1835 को ब्रिटेन की पार्लियामेंट में दिए गए लार्ड मैकाले के भाषण के कुछ अंश आभार : भारत स्वाभिमान ट्रस्ट फेस बुक

मारें भी और रोने न दें

महँगी पड़ी ओबामा प्रशासन पर टिप्पणी-पी.टी.आई.वाशिंगटन

बराक ओबामा प्रशासन के खिलाफ टिवटर पर गॉसिप फैलाने के आरोप में व्हाइट हाऊस के जिस स्टाफ को निकाल दिया गया था, वह भारतीय मूल के अमेरिकी नागरिक जोफी जोसफ हैं।

कितने सुरक्षित हैं आप जिनके घुटनोंपर सिर रखकर सो रहे हैं (अमेरिकी शटडाऊन)

दुनिया की अकेली महाशक्ति अमेरिका के ज्यादातर केंद्रीय कर्मचारी आज से घर बैठने पर मजबूर हुए। उनकी यह छुट्टी कब तक चलेगी इसके लिए उन्हें वेतन भत्ता मिलेगा या नहीं इन सवालों के जवाब अभी नहीं है। उन्होंने किसी अन्याय के विरोध में कोई हड़ताल नहीं की है। उनकी सरकार के पास उनको देने के लिए पैसे नहीं है इसलिए उन्हें छुट्टी पर भेजा गया है। अमेरिकी संसद के निचले सदन में विपक्षी रिपब्लिकन पार्टी का बहुमत है, जो राष्ट्रपति बराक ओबामा के हेल्थ केयर प्रोग्राम से सहमत नहीं है उसकी साफ राय है कि सरकार चलाने के लिए जरूरी रकम जारी करने को लेकर वह तभी राजी हो सकती है जब सत्तारूढ़ दल इस प्रोग्राम में उसकी मर्जी के बदलाव करने के लिए तैयार हो। किसी बाहरी व्यक्ति को यह सरकार की जिद लग सकती है कि विपक्ष की राय के सामने वह थोड़ा झुकने को तैयार क्यों नहीं हो जाती। लेकिन हकीकत कुछ और ही है। पिछले राष्ट्रपति चुनाव में ओबामा हेल्थकेयर नाम से चर्चित प्रोग्राम बहस का मुद्दा बना हुआ था। इस टकराव का ही यह नतीजा है कि आज अमेरिकी सरकार के पास सिर्फ अपनी फौज, एयर ट्रैफिक कंट्रोल और बाहर से आने वालों की सुरक्षा जांच जैसे बुनियादी महत्व के विभागों को छोड़कर और किसी भी विभाग को देने के लिए कुछ भी नहीं है। —आभार : नवभारत टाइम्स

आओ बतायें आज तुम्हें 140 का रहस्य

स्वप्नानुभव V.I.P. न 139 न 141

स्वप्नानुभव : 24 मार्च 2013 को भगवान श्री कल्कि के एक भक्त श्री सुभाष गुप्त को प्रात: 5 बजे स्वप्न अनुभव हुआ जिसमें वह श्री कल्कि बाल वाटिका के अध्यक्ष श्री योगेश गुप्त से 140 कल्कि भक्तों को वैद्यनाथ धाम श्री कल्कि की मूर्ति स्थापना करने के लिए चलने को कह रहे हैं।

बैद्यनाथ धाम

(प्रात: उठते ही उन्होंने यह अनुभव जब मामाजी को सुनाया तब मामाजी ने पूछा कि यह वैद्यनाथ धाम कहाँ है ? मुझे तो नहीं मालूम, क्या आपको मालूम है ? इस पर श्री सुभाष जी बोले कि मुझे भी नहीं मालूम कि कहाँ है बस मैंने तो तुम्हें अनुभव सुना दिया। इस पर मामाजी ने कहा कि बन पड़े तो अनुभव लिख कर भेज दीजिए फिर अनुभव मुझे मिलने के चार पाँच दिन बाद अर्थ बता पाऊँगा।)

पता नहीं क्यों अनुभवों अर्थ में डराने वाले मामाजी के अर्थ बताने पर श्री सुभाष जी ने अनुभव के अर्थ को क्यों गंभीरता से लिया। हो सकता है कलियुग में शंकर और कल्कि दोनों संहारक जल्द ही सतयुग स्थापना करना चाह रहे हों।

वैद्यनाथ धाम पटना से आगे कोलकाता से पहले जे. सी. डी में पड़ता है। निरीक्षण परीक्षण से मालूम चला कि यह ऐसा तेजवान स्थान है कि जब भगवान विष्णु ने माँ सती के शरीर के 52 टुकड़े किये थे तो उसमें से मां सति का हृदय इसी स्थल पर गिरा था।

रावण भी जब भगवान शंकर को प्रसन्न करके पार्वती जी द्वारा पूजित जो शिवलिंग लाया था वह भी इसी वैद्यनाथ धाम में मां सति के हृदय पर ग्वाल रूप धारी श्री गणेश जी ने स्थापित किया था। प्यारे बच्चों, जहाँ यह शिवलिंग स्थापित है उस कमरे की लम्बाई-चौड़ाई लगभग 20-20 फुट है। इसमें मात्र लगभग 38 इंच का एक दरवाजा है। प्रति वर्ष सावन भादो में लगभग एक से सवा लाख आदमी कावड़ चढ़ाने के लिये यहाँ घुसते और निकलते हैं।

जिसे पिया कहे वही सुहागन

जब दो महाशक्तियों ने ऐसा चाहा ही है तो श्री कल्कि बाल वाटिका क्या करती। वह तो स्वप्न अनुभव का सहारा लिये हुए इन दो महाशक्तियों के उपचार प्रार्थना करती हुई आगे बढ़ती चली गई।

17 नवम्बर 2013 के 140 भक्तों के टिकट बुक कराए लेकिन कलियुग ने ऐसा प्यार भरा 440 वोल्ट का झटका श्री कल्कि बाल वाटिका को दिया कि सारी टिकटें कैंसिल करानी पड़ी। लेकिन साथ तो दोनों महा शक्तियाँ भी थीं। **कलियुग डाल-डाल है तो यह महाशक्तियाँ पात-पात रहीं।**

दोबारा 17 जनवरी के टिकट बुक कराए गए। मौसम बहुत खराब था, दिल्ली में ही 5-6 दिन से सूर्य भगवान के दर्शन नहीं हुए। रेलगाड़ियाँ 10-10 घंटे देरी से चल रही थीं। मामाजी 9 दिन पहले वैद्यनाथ धाम पहुँचे **तो उनकी गाड़ी भी मात्र 24 घंटे लेट थी।** बैद्यनाथ धाम में प्रति दिन नई से नई उपजने वाली कलियुग की विकराल शक्तियों को मामाजी (राम कृष्ण परमहंस के आवेशावतार गुरुवर लक्ष्मी नारायण जी के अदने से शिष्य) उपचारो द्वारा कीलते गए। उसी प्रकार ही मामाजी ने दिल्ली में अपने साथियों से सूर्य भगवान, इंद्र भगवान, वरुण देवता, पवन देवता के उपचार के लिये कहा जिसे कल्कि जी के भाग्यवान देवी देवताओं ने निष्ठा से किया। 139 साथियों के साथ 11 महीने के संघर्ष के बाद मामाजी को भी बैद्यनाथ धाम के इतिहास में दोनों महाशक्तियों ने विजय का आशीर्वाद दिया। नई दिल्ली से कोलकाता राजधानी ठीक समय 5:35 पर चली जिसमें दो महाशक्तियों ने सिर्फ 140 यशस्वी देवी देवताओं को बुलाया था। श्री आयुष गोयल का कार्ड एल एम बी होटल जयपुर में 1 महीने पहले मामाजी से मिले श्री शीनू गड़ोडिया को श्री मनोज पाण्डेय ने दे दिया था। बैद्यनाथ धाम जाने के लिए कल्कि भक्तों की संख्या पूरी हो चुकी थी। उसी समय सामने से दौड़ते हुआ श्री कल्कि शरण गोयल का पुत्र श्री आयुष गोयल स्टेशन से ट्रेन की ओर दौड़ते आए। महज 6 फुट की फाँसले से गाड़ी फर्राटे से उनके आगे से निकल गई।

बैद्यनाथ में दो महाशक्तियों के प्रथम समागम पर कमाल बिना कार्ड के इजाजत नहीं सिर्फ 140 यशस्वी भक्त न एक कम न एक ज्यादा

तो दोस्तों है न स्वप्न अनुभव और इन महा शक्तियों का अद्भुत अंतरंग ताल मेल।

नोट: कहां तो ट्रेन 10-10 घंटे लेट चल रही थीं पर जब यह ट्रेन जे.सी.डी देवघर-वैद्यनाथ धाम 20 मिनट समय से पहले थी।

-न एक कम न एक ज्यादा सिर्फ़ 140 देवी देवताओं को दिल्ली, कोलकाता, सीकर, सूरत से महापुण्यवान बनाने के लिये ब्रह्माण्ड के सबसे बड़े सर्जन (जिन्होंने रावण की 9 बार कटी गर्दन की तुरन्त सर्जरी करके टाँके लगाये) बाबा वैद्यनाथ ने पटना के आगे कोलकाता से पहले जे. सी. डी. में अपने धाम में भगवान श्री के श्री विग्रह की स्थापना में बुलाया

आपबीति

कल्कि जी से लेने के बाद कल्कि जी को देना भी पड़ता है वर्ना.............

आपबीति–श्री श्रेय गुप्त

सन् 1995 से मैं अपनी बहन के साथ श्री कल्कि बाल वाटिका (चांदनी चौक) में आया करता था। हम बहन भाई बाल वाटिका में आकर यहाँ के विभिन्न प्रोग्रामों में हिस्सा लेते थे,यहाँ तक कि मैं तो नाटकों में भी हिस्सा लेता था। मुझे नाटक में हिस्सा लेने में बड़ा मजा आता था। सन् 2000 में मैंने कल्कि दिग्विजय नाटक में गणेश जी का पार्ट अदा किया था।

साथियों, समय निकलता गया, मेरी माता जी श्री रामजस कॉलेज में प्रोफ़ेसर हैं फिर भी पढ़ाई में तो आप जैसा ही हूँ। मुझे सी. ए का इम्तहान देना था, मुझे और मेरी मम्मी को मेरी कमजोरियाँ मालूम थीं। इस पर मेघना दीदी से पूछ पूछ कर मैं कल्कि जी के उपचार करता रहा। दोस्तों कमाल है, दयानंद विहार में मेरी मम्मी कल्कि जी की मूर्ति स्थापना कर रही थी और जैसे ही मैं पूजा करने बैठा तभी मेरे दोस्त का फोन आया कि मैंने पहली बार में ही सी. ए. क्लीयर कर लिया है। मुझे और मेरे परिवार को पहली बार में ही बिल्कुल असम्भव लगता था। श्री कल्कि जी की कृपा से दो तीन महीने में मुझे गुड़गाँव में 30,000 रुपय की नौकरी भी मिल गई। उसके कुछ ही समय बाद डिफेंस कॉलोनी में मुझे एक लाख की नौकरी मिल गई।

दोस्तों बड़ों में तो होता ही है कि जो हमें मिल रहा है वह हमारे भाग्य का है, मैं भी कोई उससे अलग तो हूँ नहीं और अब तो पढ़े लिखे परिवारों की तरह मेरा भी मानना था कि मैं कुछ हूं और तभी मुझे यह सब मिल रहा है। मैंने अपने जरा हाथ पैर और फैलाए कि सी. ए. का अपना आफ़िस चालू करूं। तभी अचानक मुझे दो स्वप्न अनुभव हुए जिनको देख कर मेरा परिवार और मैं विचिलित (जैसे पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई) हो गये।

पहला स्वप्न अनुभव था कि बिना कारण के मुझे कंपनी से निकाल दिया गया है। दूसरे स्वप्न अनुभव में कि नई कम्पनी में मेरा पैसा लगाना फलीभूत नहीं होगा।

मेघा दीदी से अर्थ पूछे गए, उन्होंने आई सी यू उपचार तो बताया साथ ही यह कह कर हाथ झाड़ लिया कि अनुभव टेढ़ा है, मेरी समझ के बाहर है बन पड़े तो आप इंदु दीदी या मामाजी से बात कर सकते हैं। मुझे तो इन दोनों से पूछने में हिचक लगती थी तो मैंने मम्मी की डयूटी लगाई। म्ममी को इस काम में एक दो दिन लग गए। इंदु दीदी ने कहा कि सोच कर जवाब दूंगी। क्योंकि मुझे तो अब ऑफिस जाते हुए भी डर लगने लगा कि अनुभव में जब बिना गलती के बाहर निकाल दिया है अगर गलती हो गई तो क्या होगा? मेरे जिद्द करने पर मम्मी ने मामाजी से पूछा पर मामाजी को दिल्ली से बाहर जाना था और उन्होंने 20–25 दिन आगे का टाइम दिया और साथ ही कह दिया कि आने से तीन चार दिन पहले पूछ जरूर लेना ताकि मम्मी परेशान न हों। मैं मम्मी के पीछे पड़ा रहा। जनवरी 2014 में दिल्ली में बारिश हो रही थी। मम्मी को मजबूर किया तो वह परिस्थिति को भांप कर मामाजी के भागीरथ पैलेस ऑफिस में बहन के साथ पता पूछते हुए पहुँच गई। अनुभव सुनकर मामाजी ने पहले तो पिछले 15–16 वर्षों के बारे में जानकारी ली और फिर पूछा कि मैंने कल्कि जी के लिए क्या किया है, क्या कर रहा हूँ?

श्री श्रेय गुप्त कल्कि जी की मूर्ति का परीक्षण करते हुए मामाजी के साथ जयपुर में

दूसरा प्रश्न जब यह कल्कि वाला है और श्री कल्कि बाल वाटिका पत्रिका पढ़ता होगा तो इस 3 वर्षों में कल्कि जी ने दिया उसमें शुभ के खजाने में कितना दिया?

मम्मी ने बताया मामाजी अभी तो कुछ नहीं । इस पर मामाजी ने कहा भगवान से 20 रुपये का भूलचूक का प्रसाद करके जो बनता हो दे देवें। नौकरी न छुटे इसके लिये जब तक सही अनुभव न आए कोई कल्कि जी का प्रोजेक्ट ले लेवे। इससे कलियुग हाथ न मार पायेगा। मैंने मामाजी के कहने से जयपुर में कल्कि जी की मूर्ति बनवाने का प्रोजेक्ट एवं जयपुर बालों की बात बात में जबान बदलने की कला को समझते हुए अपने थोड़े से कल्कि जी के शुभ के रुपयों से कल्कि जी के प्रचार का पूर्ण कार्य करें।

दोस्तों वास्तव में कमाल है प्रोजेक्ट के संकल्प लेने–जयपुर मामाजी के साथ जाने के बाद तो मेरे ऑफिस का महौल तो बेहतर होता जा रहा है साथ ही मेरा प्रोग्राम मेरे ऑफिस के साथियों के साथ श्री कल्कि जी के दर्शन करने के लिए 28 फरवरी को वैद्यनाथ धाम गया वहीं से वाराणसी में अभी बने सीतला मां मन्दिर–कुष्माण्डा मां एवं काशी विश्वनाथ मन्दिर में जहाँ 8 मार्च को कल्कि जी की मूर्ति लगेगी 2 मार्च को अपने 4 साथियों के साथ आ गया हूँ।

कल्कि जी बाते नहीं काम चाहते हैं

श्री रोहित गुप्त मो० 09899499848

स्वप्नानुभव : मुझे स्वप्न अनुभव में एक जोरदार वाणी कह रही है कि जहाँ कहीं भी धार्मिक कार्य, सतसंग, संकीर्तन हो रहा हो वहाँ पर कल्कि समाज से तुम बात करके श्री कल्कि साहित्य-सामग्री के ज्ञान द्वारा प्रचार प्रसार करो। अब तो कलियुग के अंत काल तक श्री कल्कि का प्रचार प्रसार ही एक मात्र उपाय है। इसी के द्वारा प्रति वर्ष दशहरे की तरह श्री कल्कि जी के विजय दशमी पर्व देखेंगे।

अब तक दशहरे पर विजय दशमी पर्व मनाते थे अब जिस दिन कल्कि जी का प्रचार प्रसार करोगे, कलियुग के अंत तक हर बार विजय दशमी मनाओगे

अर्थ: भगवान श्री कल्कि की रौबदार वाणी कल्कि वालों अथवा सनातन धर्मियों को बता रही है कि आप दुनियादारी अथवा धर्म के जो भी कार्य कर रहे हैं उसमें बन पड़े तो किसी भी धार्मिक स्थलों पर श्री कल्कि का साहित्य-सामग्री का प्रचार प्रसार करो। अब श्री राम की रावण पर विजय की तरह यही एक मात्र उपाय कलियुग के अंत तक चलेगा। मामाजी का भी यह सत्य अजमाया हुआ है कि कल्कि जी की विभिन्न प्रकार की बनी हुई प्रचार सामग्रीयाँ जहाँ भी रखी रहती हैं वह सूर्य के तेज की भांति तेज फैलाती रहती हैं। सनातन धर्म के मानने वाले वैष्णवों को मूर्ति स्थापना की भांति फल मिलता रहता है।

श्री रोहित गुप्त

सुझाव: अगर आपकी घर, व्यापार की व्यवस्था अस्थायी है तो श्री कल्कि साहित्य-प्रचार सामग्री को प्रोजेक्ट के रूप में अपना लो, इससे आपके घर और व्यापार (रोजी रोटी) के प्रगति के मार्ग खुलेंगे।

उपचार: सरस्वती महारानी एवं गंगा महारानी (दोनों ज्ञान की देवी हैं) के लिए 1 रुपये 2 बताशे से प्रतिदिन संकल्प करते रहें कि हे मां! हम कल्कि जी के साहित्य प्रचार सामग्री का धार्मिक स्थलों पर श्री कल्कि बाल वाटिका के सहयोग से प्रचार करेंगे। हमारी परेशानी दूर कीजिए, हमें सपरिवार स्वस्थ शरीर से, सुखी भाव से, वैभवता पूर्वक भगवान श्री कल्कि जी के प्राकट्य प्रचार का सम्पूर्ण कार्य राजा रानियों की तरह करना है, हमें सुलक्ष्मी दिलवाइए।

भगवान श्री कल्कि का अदब खौफ प्रेम परवाह बनाए रखें

—मामाजी 9136377829

प्यारे बच्चों, विभिन्न श्री कल्कि बाल वाटिकाओं के बालक बालिकाओं की परेशानियों को मद्दे नजर रखते हुए मामाजी श्री कल्कि जी की कृपा से प्रत्येक महीने के आखरी अथवा चौथे रविवार में जैसा मासिक पत्रिका में निर्देश दिया जाता है, भगवान श्री कल्कि जी हनुमान जी से प्रार्थना करेंगे कि वह दिल्ली में रहें। कारण वश बाहर जाना पड़ा भी तो उनकी जगह डा. वेद प्रकाश गुप्त बाल वाटिका का कार्य भार सम्भालेंगे। मामाजी यहाँ के प्रबन्धक श्री आदरणीय खन्ना जी की चाहत को जरूर पूरा करेंगे।

मामाजी डॉक्टर वेद प्रकाश गुप्त महीने के आखिरी अथवा चौथी बाल वाटिका में करोड़ीमल कॉलेज सम्भालेंगे

दिल्ली विश्वविद्यालय में श्री हनुमान मंदिर में श्री कल्कि बाल वाटिका के बालक व बालिकाएं हवन करते हुए

—पृ. 10 का शेष कोलकाता बाल वाटिका.........

द्वारा बनाया गया स्थान है। यह मां काली का प्रख्यात मन्दिर है। इसी मन्दिर की गौशाला में कल्कि जी की मूर्ति स्थापना हुई है। यह कार्य प्रतिभा अग्रवाल, वरुण चौधरी और राजेश अग्रवाल जी की चेष्टाओं से पूरा हो पाया है। हम उनका अभिनन्दन करते हैं।

4. चलचित्र — श्री कल्कि— द लास्ट सेवियर

कल्कि भगवान के बारे में सम्पूर्ण जानकारी देने वाली फिल्म श्री कल्कि — द लास्ट सेवियर बनकर तैयार हुई। यह फिल्म विशेषतौर से नए भक्तों के मार्ग दर्शन के लिये बनाई गई है जिसका सारा श्रेय अकांशा चौधरी और वरुण चौधरी को जाता है। अन्य कल्कि भक्तों जैसे श्रुति सर्राफ, मयंक चौधरी, श्रीमती इंदु बंसल और श्रीमति प्रतिभा अग्रवाल ने भी सहयोग दिया है। इस फिल्म को सैंसर सर्टिफिकेट भी मिल गया है और इसका ट्रेलर सिनेमा घरों में चल रहा है जिसका सारा श्रेय राजन चौधरी को जाता है। विदित अग्रवाल को भी धन्यवाद जिन्होंने डी. वी. डी की कॉपियाँ बनाने में सहयोग दिया।

शेष अगले अंको में.....

देसी घी से बचाव

– डॉ० वेदप्रकाश गुप्त

यह हर बच्चे से वृद्ध व हर बीमारी-रक्त चाप (ब्लड प्रेशर) मधुमेह (डाईबिटीज) हड्डियों की बीमारी (कैलशियम की कमी) असाध्य रोग (कैंसर) इत्यादि में गुणकारी है।

देशी घी एक पुस्तक ''The 150 Healthiest Foods on Earth'' -By John Bowden ने लिखा है कि घी में Butyric Acid जो एक Fatty Acid होता है वो वायरस व कैंसर के किटाणू से लड़ता है। इसमें Betacarotene, Vitamin A,D,E,K होते हैं जो Antoxidant (बहुत लाभकारी तत्व) का कार्य करते हैं व बहुत बीमारियों से लड़ते हैं।

Vitamin A यह हमारे दूसरे खाने वाले तेल में नहीं होता है। घी में Linobic Acid होता है जो पेट के कैंसर व अन्य बीमारियों से बचाता है। अगर बाजार में घी में मिलावट की आशंका हो तो हमारी दादी मां के नुस्खे के अनुसार घर में भी देसी घी बना सकते हैं।

विधि बिना नमक के मक्खन को उबाल कर उसमें दूध इत्यादि तत्व निकाल लें। आखिर में घी रह जाएगा व कुछ समय बाद जम जाएगा।

कुछ अत्यंत भारतीय खाने की लाभकारी चीजें:-

घी सेवन की विधि:-हर व्यक्ति को सारे दिन में ज्यादा से ज्यादा 2 चाय के चम्मच घी से अधिक की जरूरत नहीं हैं। मोटे व्यक्ति को इसका सेवन कम करना चाहिए।

सेवन:-1 चम्मच (चाय का) दाल, साग इत्यादि में 1 चम्मच (चाय का) रोटी इत्यादि में

गत वर्षो की भांति असरोही में श्री कल्कि जयंती उत्सव 23-24 मार्च को

स्थान: असरोही, ग्राम करहल, जिला शिकोहाबाद,फिरोजाबाद (उ. प्र.)

आयेजक: पं रमेश मिश्रा,पं कमलेश मिश्रा,पं बिमलेश मिश्रा

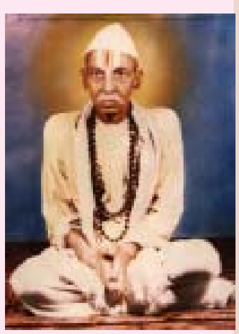

आयोजक: श्री कल्कि बाल वाटिका, असरोही

श्री कल्कि महा सम्मेलन

ब्रह्मलीन श्री रामकृष्ण दास जी गुप्त के शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में

ब्रह्मलीन श्री रामकृष्ण दास जी गुप्त

तिथि: चैत्र कृष्ण 15, विक्रम सम्वत् 2070
दिन: रविवार, 23 मार्च 2014
स्थान: पंचायती धर्मशाला, गली बेरीवाली, कूचापाती राम, दिल्ली 110006
निवेदक: सार्वभौम श्री कल्कि मंडल (समस्त)
महामंत्री श्री रामनारायण गोयल
9899463111

Registered with the Registrar of Newspaper for India under Licence No. Delhi-N/2005/15596 Postal D. No. DL (DG)-11/8061/2012-2014

1 से 8 तक | 25 ग्राम | मार्च 2014 | मूल्य 10 रु

कल्कि संग्रहालय में आप देखेंगे

*भारत भूमि पर हमारा जन्म हमारे सौभाग्य की गाथा गाता है * भारत भूमि श्री हरि नारायण की भूमि है * भगवान विष्णु के दशावतार * अभी कल्कि क्यों? * कलियुग के लक्षण * कल्कि जी ने अवतार क्यों लिया? * हनुमान जी/रामकृष्ण परमहंस हमारे गुरु क्यों? * प्राचीन भारत एवं आधुनिक भारत में अंतर * कल्कि जी की पुकार क्यों करें? * कल्कि जी की स्वप्नानुभव लीला * कल्कि की पुकार ही सार है * कल्कि जी की भक्ति कैसे करें? * कल्कि जी का प्रचार कैसे करें? * धर्म/भक्ति/ज्ञान और कल्कि * श्री कल्कि साहित्य*

श्री कल्कि बाल वाटिका

श्री कल्कि बाल वाटिका मासिक पत्रिका
के सदस्य बनने हेतु सम्पर्क करें—
☎9312533445, 9136377829, 9811858723

चाँदनी चौक ❖ कसेरू वालान, पहाड़गंज
❖ पालनपुर ❖ देहरादून ❖ असरोही ❖ कोलकाता ❖ चेन्नई
1903/3, पहली मंजिल, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006 सम्पर्क : 23886646, 23866661
हाउस नं. 4116, कसेरू वालान, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, सम्पर्क : 23587079
सी 0-2/16, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली-110035
कॉलेज कम्पाउन्ड, गीता सोसाईटी, पालनपुर : 385001, गुजरात, सम्पर्क : 02742-258068, 09824968440
जी 97, नेहरु कालोनी, देहरादून (उत्तरांचल), सम्पर्क : 0135-2671643, 09837343560
2 नम्बर, हाईट रोड, लिलुआ, हावड़ा-711204 (कोलकाता)
आभार/Ack. : श्री कल्कि पुराण, ऋग वेद, ऋषि प्रसाद, स्वामी राम सुखदास, नवभारत टाइम्स
योगेश प्रकाश गुप्ता, दिल्ली द्वारा प्रकाशित व अन्य बालकों के ज्ञानवर्धन हेतु
प्रिंटर्स : शिवानी ऑफसैट, ए-36 नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (यू.पी.)
पारस प्रिंटिंग प्रैस, पटपड़गंज, नई दिल्ली

न करने का न करवाने का झंझट बस फोन करते रहें जब तक काम पूरा न हो
मंदिरों में भगवान श्री कल्कि जी की मूर्ति, पोशाक, लाईट प्रभारी :
हर्षित गुप्ता, (मनु) 9999885277)
अंकित गड़ौदिया (9968154304)
राहुल अग्रवाल (9891879718)
अलका गोयल (9811281271)

Regd. office : 1903, 1 st Floor, Chandni Chowk, Delhi-6, Tel : 23973383